الموضوع : عشر وقفات مع عيد الفطر

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

قناة الخطب الهندية: https://t.me/khutbat_hindi

शीर्षक: ईदुलफ़ित्र से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुऐं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

١. ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह तआ़ला से पूरे तौर से डरो और उसका तक़वा अपनाओ,इस्लाम को बलपूर्वक थाम लो,और अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा करो कि उसने रमज़ान महीने के अंत तक तुमको पहुंचाया,तुम्हारे रब का कथन है:

﴿وَلِتُكۡمِلُواْ ٱلۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُواْ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ﴾ [سورة البقرة:١٨٥]

अर्थात:वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तआ़ला की दी हुई मार्गदर्शन पर उसकी प्रशंसा करो और उसका आभारी रहो।

٢. ए मुसलमानो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमाया कि रमज़ान केवल:(गिनती के कुछ दिन हैं),यह दिन कितनी जलदी गुजर जाते हैं,यह दिन-रात गुज़र गए और हमसे जुदा हो गए,आपको महसूस हुआ कि कैसे यह दिन गुजर गए?क्या आपको एहसास हुआ कि कितनी जलदी यह दिन-रात बीत गए?

٣. ए मोमिनो!आपको बधाई हो कि आपने इस महीने के रोज़े रखे,आपको बधाई हो कि आपने इस महीने की रातों में क़याम किया,आपको बधाई

हो कि आप इस महीने के अंत तक को पहूंच गए,जबकि बहुत से लोगों का निधन हो गया और उन्हें रमज़ान का यह अंतिम क्षण नसीब न होसका,हममे से प्रत्येक पर अल्लाह के अनेक आशीर्वाद हैं।

६. ए मुसलमानो!आप सब को वह खुशी बधाई हो जो हमें इस्लाम के इस महान स्तंभ को पूरा करने के पश्चात रमज़ान महीने के अंत में प्राप्त होती है,हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं,उसके एकता और उसकी महानता की गीत गाते हैं,यदि अल्लाह ने चाहा तो हमारे पुण्यों में वृद्धि हुआ होगा,हमारे पापों को क्षमा मिला होगा और हमारे स्थान उच्च हुए होंगे।

७. ए अल्लाह के बंदो!आपको वह खुशी बधाई हो जो हमें दो महान अवसरों के पश्चात ईद के रूप में प्राप्त होती है,जिसमें हमारे पाप मिटाए जाते हैं,पुण्यों में वृद्धि होता है,हमारे स्थान उच्च होजाते हैं,रोज़े पूरे करने के पश्चात हम ईदुलफ़ित्र मनोते हैं और ह़ज पूरा करने के पश्चात ईदुलअज़्हा मनाते हैं,हमारी ईदें दीन व प्रार्थना,नमाज़ व तकबीर, (प्राण की बलि) और ज़काते फितर से निर्मित हैं,यह खुशी भी है और परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार भी,आपसी मोलाक़ात,आपसी प्रेम,पूर्व के पापों को क्षमा और नए संबंध बनाने,छल-कपट और कीना को भूल जाने का उत्तम अवसर है,जिस व्यक्ति को किसी परिजन अथवा मित्र से छल-कपट हो अथवा संबंध टूट गया हो तो उस दिन को गनीमत जान कर संबंध को जोड़े और नए से संबंध बनाए और दिलों में खूशयों के रंग भरे,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कार्य यह है कि किसी मुसलमान को खुशी पहूंचाई जाए) (सही़ अलतरगीब/:९००)

८. ए मोमिनो!आपको हमारी ईद की यह (पवित्र) खुशी की बधई हो जो बहुदेववादी और गुमराह समुदायों की ईदों में नहीं पाई जाती,बल्कि उनकी ईदें उनके पाप और अल्लाह से दूरी में वृद्धि कर देती हैं।

अल्लाह के बंदो!इन रह़मतों से प्रसन्न होजाऐं,अल्लाह का कथन हैः
﴿قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا﴾ [سورة يونس:٥٨]

अर्थातःआप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के इस आशीर्वाद और रह़मत से प्रसन्न होना चाहिए।

१. अल्लाह से और(रह़मत व बरकत) आशीर्वाद की दुआ करें,समस्त प्रशंसाऐं अल्लाह के लिए हैं कि उसने हमारे उपर यह कृपा किया कि हमें इस्लाम और सुन्नत का निर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

٧.ए मुसलमानो! (ईद के दिन)सिंगार करें खुशबू लगाऐं,इमाम मालिक रहिमहुल्लाह फरमाते हैंः(मेंने विद्वानों से सुना कि वह अ़तर और सिंगार को हर ईद में मुस्तह़ब समझते थे) (इब्ने रजब की पुस्तक शरहुलबोखारी(٦/٦٨),प्रकाशकःइब्नुलजौज़ी-अलदमाम।)

٨.ए मोमिनो!अपने घरों को और अपने दिलों को खोल कर रखें,एक दुसरे के लिए दुआ करें कि अल्लाह सब के अ़मल को स्वीकार करे,एक दुसरे को भदाई दें,सह़ाबा एक दुसरे को बधई देते हुए कहा करते थेः تقبل الله منا ومنكم

(अल्लाह तआ़ला हमारे और आपके पुण्यों को स्वीकार फरमाए।)

९.ए मुसलमानो!पूर्व के कमयों को क्षमा करना एक अति महत्वपूर्ण प्रार्थना एवं आज्ञाकारी है,अल्लाह तआ़ला ने उस पर अनेक बदला व पुण्य रखा है,अल्लाह का कथन हैः

﴿فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِۚ﴾ [سورة الشورى:٤٠]

अर्थातःजो क्षमा करदे और सुधार करले उसका बदला अल्लाह के जिम्मे है।
अतः अल्लाह ने (इस कार्य पर)अनेक बदला व पुण्य का वादा किया है,जिससे पता चलता है कि यह अ़मल बड़ा महान है।

ए मोमिनो!आत्मा(दिलों) की सुधार और उनका शुद्धिकरण एक श्रेष्ठतर प्रार्थना है,उस पर अल्लाह ने सफलता रखी है,अल्लाह का कथन हैः

﴿قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ۝١٠﴾ [سورة الشمس:٩-١٠]

अर्थातः जिसने उसे पवित्र किया वह सफल हुआ और जिसने उसे भूमी में मिला दिया वह विफल हुआ।

अल्लाह के बंदो!जिन कार्यों से प्रसन्न्ता में वृद्धि होता है,उनमें यह भी है कि समाजी संबंध अच्छे बनाए जाऐं,उनका नवीनीकरण किया जाए,उनमें शक्ति लाई जाए,पूरे वर्ष के मध्य दिलों में छल कपट और नफरत के जो धूल जम गए हैं,उनसे दिलों को पवित्र किया जाए,बधाई है उस व्यक्ति के लिए जो ईद को गनीमत जान कर बिखरे हुए पति पत्नी के संबंध को बनादे,आपस में दूर दिलों को जोड़दे,जिसके कारण से उनके परिवार में खूशी पैदा हो जाए,अथवा कोई रक्त क्षमा करदे,अथवा परिजनों की आपसी रंजिश को दूर करदे।

ए अल्लाह तूने हमारे उपर रमज़ान के महीने का अंत और ईद को पहूंचाने का जो उपकार किया है,उसे हमारे लिए बरकत वाला बना दे और अपनी आज्ञाकारी के लिए इसे सहायक बनादे,ए अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुछसे निकट करदे,में अपनी यह बात कहते हूए अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला और अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

१०.ए अल्लाह के बंदो!आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि सबसे बड़ी खूशी उस समय प्राप्त होगी जब आप अल्लाह तआ़ला से पुण्य के कार्यों के साथ मोलाक़ात करेंगे,अल्लाह तआ़ला स्वर्ग वालों से फरमाएगाःए स्वर्ग वासियो!स्वर्ग वासी उत्तर देंगेःहम उपस्थित हैं ए हमारे परवरदिगार!तेरी शुभकामनाऐं प्राप्त करने के लिए।अल्लाह तआ़ला पूछेगाःक्या अब तुमलोग खुश हुए?वे कहेंगेःअब भी भला हम खुश न होंगे जबकि तूने हमें वह सब कुछ दे दिया जो अपनी मख़लूक़ में से किसी को नहीं दिया।अल्लाह तआ़ला फरमाएगाःमें तुम्हें उससे भी अच्छा बदला दूंगा।स्वर्ग वासी कहेंगेःए रब!इससे अच्छा और क्या चीज होगी?अल्लाह तआ़ला फरमाएगा किःअब में तुम्हारे लिए अपनी प्रसन्नता को सवेद रहने वाला कर दूंगा अर्थात उसके पश्चात कभी तुम पर नाराज नहीं हूंगा। (बोखारी (٦٥٤٩) और मुस्लिम (٢٨٢٩) ने इसे अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

११.ए मोमिनो!रमज़ान सुधार का और सवेद के लिए अल्लाह तआ़ला से संबंध बनाने का उत्तम अवसर है,इस लिए आप प्रार्थना में लगे रहें,रमज़ान के साथ प्रार्थना समाप्त नहीं होता,बल्कि मृत्यु के पश्चात अ़मल का दरवाजा बंद होता हैः

﴿وَٱعۡبُدۡ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأۡتِيَكَ ٱلۡيَقِينُ ٩٩﴾ [سورة الحجر:٩٩]

अर्थातःअपने रब की पूजा करते रहें यहां तक कि आपको मृत्यु आजाए।
नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः (अल्लाह के दरबार में सबसे अधिक पसंद वह कार्य है जिसे पाबंदी से सवेद किया जाए,चाहे वह कम ही हो) (बोखारी (٥٨٦١) ने आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।)
ए मुसलमानो!रमज़ान के पश्चात भी पुण्य के कार्य पर स्थिर रहना अल्लाह की तौफीक़ और अ़मल के स्वीकार होने की पहचान है,इसके विपरीत केवल मौसम ही मौसम अ़मल करना कम ज्ञान,अल्लाह की तौफीक़ से दूरी का

प्रमाण है,क्योंकि जो रमज़ान का रब है वही समस्त महीनों का रब है,किसी सलफ से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो व्यक्ति रमज़ान में खूब प्रार्थना करता है और उसके अतिरिक्त महीनों में प्रार्थना छोड़ देता है,तो उन्हों ने उत्तर दियाःयह बहुत ही बुरी क़ोम है जो केवल रमज़ान में अल्लाह को जानती है।

ए मोमिनो!मुसलमानों का एक श्रेष्ठ गुन यह है कि वे आज्ञाकारी करते हैं,आज्ञाकारी यह है कि प्रार्थना पर स्थिर रहा जाए और उसको सवेद किया जाए,अल्लाह ने आज्ञाकारी करने वालों की प्रशंसा करते हुए फरमायाः

﴿إِنَّ ٱلْمُسْلِمِينَ وَٱلْمُسْلِمَٰتِ وَٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ وَٱلْقَٰنِتِينَ وَٱلْقَٰنِتَٰتِ وَٱلصَّٰدِقِينَ وَٱلصَّٰدِقَٰتِ وَٱلصَّٰبِرِينَ وَٱلصَّٰبِرَٰتِ وَٱلْخَٰشِعِينَ وَٱلْخَٰشِعَٰتِ وَٱلْمُتَصَدِّقِينَ وَٱلْمُتَصَدِّقَٰتِ وَٱلصَّٰٓئِمِينَ وَٱلصَّٰٓئِمَٰتِ وَٱلْحَٰفِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَٱلْحَٰفِظَٰتِ وَٱلذَّٰكِرِينَ ٱللَّهَ كَثِيرًا وَٱلذَّٰكِرَٰتِ أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ٣٥﴾ [سورة الأحزاب:٣٥]

अर्थातः(जो लोग अल्लाह के आगे आज्ञाकारी के साथ अपने सर को झुकाने वाले हैं)मुसलमान पुरूष और मुसलमान महिलाऐं और मोमिन पुरूष और मोमिन महिलाऐं और आज्ञाकारी पुरूष और आज्ञाकारी महिलाऐं और सत्य बोलने वाले पुरूष और सत्य बोलने वाली महिलाऐं और सबर करने वाले पुरूष और सबर करने वाली महिलाऐं डरने वाले पुरूष और डरने वाली महिलाऐं और दान करने वाले पुरूष और दान करने वाली महिलाऐं और रोज़े रखने वाले पुरूष और रोज़े रखने वाली महिलाऐं और अपनी शरमगाहों की सुरक्षा करने वाले पुरूष और शरमगाहों की सुरक्षा करने वाली महिलाऐं और अल्लाह को अधिक से अधिक याद करने वाले पुरूष और अधिक से अधिक याद करने वाली महिलाऐं-कुछ संदेह नहीं कि उसके लिए अल्लाह ने क्षमा और विशाल बदला तैयार कर रखा है।

١٢.ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान के पश्चात शौवाल के छे रोज़े रखना सुन्नत और मुस्तहब है और अल्लाह तआ़ला ने इस पर बड़े बदले का वादा कर रखा है,जैसा कि अबू अय्यूब रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिसने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पश्चात छे रोज़े रखे तो यह(पूरे वर्ष) लगातार रोज़े रखने के जैसा है।(मुस्लिम ١١٦٤)

शौवाल के छे रोज़े की एक बड़ी ह़िकमत (नीति) यह है कि रमज़ान के फरज़ रोज़ों में जो कमी रह जाती है,इन नफली रोज़ों से इसकी भरपाई हो जाती है,क्योंकि रोज़ेदार से कोई न कोई कोताही अथवा पाप हो जाता है

जो फरज़ को प्रभावित करदेता है,अतःनफली रोज़े से फरज़ रोज़े की यह कमी दूर हो जाती है।

ईद से संबंधित यह दस(से अधिक) बिन्दु हैं,मुस्लिम बंदा को चाहिए कि ईदुलफ़ित़र के अवसर पर इन्हैं जेहन में रखे,ताकि ईद प्रार्थना में बदल जाए,केवल रीति रिवाज न रहे।

हे अल्लाह!हमारे पापों को और हमसे हमारे कामों में जो बेकार की जेयादती हुई है,उसे भी क्षमा करदे,हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हे अल्लाह!स्वर्ग को हमारा ठेकाना बनादे,हमें फिरदौसे बरीं का निवासी बना,हमें बिना हिसाब और बेगैर किसी यातना के स्वर्ग में प्रवेश प्रदान फरमा,ए करीम व दाता प्रवर्दिगार!हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हमें हमारे पापों से इस प्रकार पवित्र करदे जिस प्रकार हमारी माताओं ने हमें जना था,हे अल्लाह!हमारे इस सभा को पापों से क्षमा,अ़मल की स्वीकृति और परिश्रम की स्वीकृति व धन्यवाद के साथ समाप्ति फरमा,हे अल्लाह हमारे देश को और मुसलमानों के समस्त देशों को शांति,सोकून और खुशहाली व हरयाली का स्थान बनादे,हे अल्लाह!हमारी ईद को खुशी का स्त्रोत,हमारे जीवन को खुशहाल करदे,हमें स्वास्थ्य और शांति के साथ बारबार आज्ञाकारी व बरकत का मोसम प्रदान कर।

اللهم صل على محمد وعلى آل محمد، سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، الحمد لله رب العالمين